SISE & CTE, JABALPUR

ONLINE CLASS SESSION

- Date : 06/05/2020
- Coordinator : Smt. Shamimun Nisa
- Class : B.Ed. 2nd Sem
- Time : 12:00 to 12:40 PM
- Subject : Physics Methodology
- Topic : वस्तुनिष्ठ परीक्षण के गुण व सीमाएँ
- TLM Used : Power Point Presentation
- Attendance : 25 Participant

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के गुण:

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षण पाठ्यक्रम का व्यापक रूप से प्रतिनिधित्व करता है।
2. यह उद्देश्यपूर्ण और आसानी से स्कोर किया जा सकता है। आंकलन समय-समय पर या परीक्षक से परीक्षक तक भिन्न नहीं होंगी।
3. यह परीक्षण (अ) संयोग प निर्भरता को कम करता है और (ब) रटने की प्रवृत्ति को कम करता है। नतीजतन, अधिक विश्वसनीयता और वैधता को जन्म देता है।
4. इस प्रकार के प्रश्न अधिक प्रेरणादायी होते हैं।
5. यह समय की बचत है, क्योंकि यह निबंधात्मक परीक्षण की तुलना में उत्तर देने में कम समय लेता है। तुलनात्मक रूप से, कई प्रश्न छात्रों के लिए प्रस्तुत किए जा सकते हैं। यह मूल्यांकनकर्ता के समय को भी बचाता है।
6. यह अप्रासंगिक कारकों पर निर्भरता खत्म कर देता है जैसे कि लिखने की गति, अभिव्यक्ति की धाराप्रवाहता, साहित्यिक शैली, अच्छी लिखावट, साफ-सफाई आदि।
7. यह समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, भविष्यवाणी और व्याख्या जैसी उच्च मानसिक प्रक्रियाओं को मापता है।
8. यह स्टेंसिल या मशीन द्वारा आंकलन की अनुमति देता है। इस प्रकार

वस्तुनिष्ठ परीक्षण की सीमाएं:

1. उत्तर को व्यवस्थित करने की क्षमता, तार्किक व सुसंगत रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता आदि का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।
2. अनुमान लगाना संभव है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बड़ी संख्या में विकल्पों के समावेश से इसकी संभावना कम हो सकती है।
3. यदि एक परीक्षार्थी की सभी प्रतिक्रियाएँ सही उत्तर के रूप में चिह्नित पाई जाती हैं, तो परिणाम भ्रामक हो सकता है।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षण में प्रश्नों व विकल्पों का निर्माण कठिन है जबकि उनका उत्तर देना काफी सरल है।
5. यह संश्लेषण से अधिक विश्लेषण की मांग करता है।
6. परीक्षार्थी के भाषा-कौशल का परीक्षण संभव नहीं है।
7. प्रश्न-पत्र के मुद्रण की लागत एक निबंध परीक्षण की तुलना में काफी अधिक है।
8. **अनुमान को प्रोत्साहन:-** ये परीक्षण, छात्रों में अनुमान लगाने की अवांछनीय प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते हैं। वे बुद्धि का प्रयोग नहीं करके केवल अनुमान

से सत्य या असत्य पर चिह्न लगा देते हैं तथा शब्दों को रेखांकित कर देते हैं।

9. **भाषा व शैली की दुर्बलता:-** इन परीक्षणों का भाषा तथा शैली से कोई प्रयोजन नहीं होता है। अतः छात्र इन बातों की ओर जरा भी ध्यान नहीं देते हैं। फलस्वरूप, उनकी भाषा तथा शैली हमेशा के लिए दुर्बल हो जाती है।

10. **भाव-प्रकाशन की असमर्थता:-** ये परीक्षण, छात्रों की अभिव्यंजना-शक्ति का विकास नहीं कर पाते हैं। अतः वे अपने भावों का प्रकाशन करने में असमर्थ सिद्ध होते हैं।

11. **श्रेष्ठ मानसिक शक्तियों की जाँच असम्भव:-** इन परीक्षणों द्वारा श्रेष्ठ मानसिक शक्तियों की जाँच असम्भव होती है। जैसे - तर्क, चिन्तन, मौलिक विचार, सृजनात्मक कल्पना तथा विश्लेषणात्मक शक्तियों की जाँच का कोई स्थान नहीं होता है।

12. **केवल तथ्यात्मक ज्ञान की जाँच:-** इन परीक्षणों द्वारा केवल तथ्यात्मक ज्ञान पर बल दिया जाता है। अतः इसके अन्तर्गत केवल इसी ज्ञान की जाँच की जा सकती है।

12. **विश्वसनीयता:-** इस प्रणाली में विश्वसनीयता अपनी चरम सीमा पर पाई जाती है। इसका कारण यह है कि चाहे कोई भी व्यक्ति अंक प्रदान करे, उनमें किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं होता है।

13. **विभेदीकरण:-** इस प्रणाली की एक मुख्य विशेषता है - इसकी विभेदीकरण करने की क्षमता। इसका अर्थ यह है कि प्रतिभाशाली तथा मन्दबुद्धि छात्रों के भेद को स्पष्ट कर देती है।

14. **विस्तृत प्रतिनिधित्व:-** इस प्रणाली में प्रत्येक प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक होती है कि विषय का कोई भी अंक अछूता नहीं रह जाता है। इस तरह यह प्रणाली विषय का विस्तृत प्रतिनिधित्व करती हैं

15. **समय की बचत:-** इस प्रणाली में छात्र कम समय में बहुत से प्रश्नों का उत्तर देते हैं। परीक्षकों को भी उत्तर पुस्तिकाओं को जाँचने में कम समय लगता है।

16. **संक्षिप्त उत्तर:-** प्रणाली में एक प्रश्न का केवल एक ही संक्षिप्त उत्तर हो सकता है। अतः छात्रों को अपने उत्तरों के सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम नहीं रह सकता है।